पापा ने ग्रंथों से कई सारी कहानियां इनके बारे में बताई। इससे मेरी रुचि भारतीय इतिहास के प्रति जागृत होने लगी। फिर मैंने कई सारे पत्र-पत्रिकाएं और जानकारी जुटाने के लिए पढ़ी।

प्रताप (शहीद राजेंद्र सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय)

पटना संग्रहालय आकर ही पहली बार याक्षिणी के बारे में जाना था। फिर अपनी स्कूल की लाइब्रेरी में कई सारी किताबों को पढ़ने के बाद और जानकारियां जुटाई। साथ ही साथ स्कूल के कई शिक्षकों खासकर इतिहास के शिक्षकों ने ज्यादा अच्छे तरीके से मुझे समझाया।

शालिनी (कक्षा 10, आर्मी पब्लिक स्कूल)

इतिहास में मेरी शुरू से रुचि रही है। मुझे पुरानी चीजों के बारे में जानना काफी अच्छा लगता है। याक्षिणी के बारे में मुझे अपने स्कूल के शिक्षकों से जानकारी मिली। फिर मैंने इंटरनेट खंगाला, इससे मेरा और ज्ञानवर्धन हुअ।

हर्ष कुमार(कक्षा 10, डीएवी पब्लिक स्कूल, बोर्ड कॉलोनी)

खासकर बिहार के इतिहास को जानना और यहां की विरासत की जानकारी रखना मुझे काफी पसंद है। किताबों में याक्षिणी के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी, इसलिए मैंने फिर इंटरनेट की सहायता से और जानकारियां इकट्ठा की।

हर्षा (कक्षा 10, माउंट कार्मेल)

याक्षिणी के बारे में मुझे सर्वप्रथम अखबारों से जानकारी मिली। साल 2012 से मैं इस बारे में जानकारी जुटा रहा हूं। पहली बार 2013 में पटना संग्रहालय में इनकी प्रतिमा को देखा था।

केशव आर्या (राम मोहन रॉय सेमिनरी स्कूल)

साल 2011 में मैं पहली बार पटना संग्रहालय अपने परिवार के साथ आई थी। यहीं पर मैंने याक्षिणी की प्रतिमा दिखी। इसके बाद इस बार में मैंने अपने पापा से बात की। उन्होंने मुझे काफी जानकारियां दी।

अमृता भारद्वाज (कक्षा 12, माउंट कार्मेल)

जब मैं सातवीं कक्षा में थी उस समय मुझे याक्षिणी के बारे में पढ़ना था। इतिहास विषय पहले तो मुझे बोरिंग लगता था लेकिन याक्षिणी के बारे में पढ़ कर मेरी इसमें रुचि जागने लगी।

साल 2013 में जब मैं पहली बार संग्रहालय आया था उसी दौरान याक्षिणी को जानने का मुझे मौका मिला था। फिर मेरे परिवार वालों ने मुझे बताया कि पटना के दीदारगंज के पास खुदाई में इनकी प्रतिमा मिली थी। फिर परिवार के लोगों ने ही इनकी सौंदर्य का वर्णन कर इनके बारे में पूरी जानकारी दी।

प्रशांत कुमार(शहीद राजेंद्र सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय)

मैं साल 2000 में पटना संग्रहालय विशेष रूप से याक्षिणी की प्रतिमा देखने आया था। फिर मेरे

साल 2014 में स्कूल की तरफ से पटना संग्रहालय आया था, उसी दौरान स्कूल के शिक्षकों ने याक्षिणी के बारे में बताया था। हालांकि इतिहास मेरा विषय नहीं हैं फिर भी याक्षिणी के बारे में इस ओर मेरी दिलचस्पी बढ़ी। फिर मैंने इंटरनेट और शिक्षकों के सहयोग से इस बारे में और जानकारी जुटाई।

आदित्य प्रताप वर्मा, (कक्षा 10, डीएवी पब्लिक स्कूल, बोर्ड कॉलोनी)

विश्व विख्यात कलाकृतियों में से एक चामर ग्राहिणी यक्षिणी शताब्दी वर्ष पर आयोजित आलेख प्रतियोगिता में कार्मल स्कूल की अमृता भारद्वाज को प्रथम, आर्मी पब्लिक स्कूल की शालिनी को द्वितीय व कार्मल स्कूल की ही हर्षा को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। पटना संग्रहालय में कला संस्कृति एवं युवा विभाग, पटना संग्रहालय व फाउंडेशन फॉर आर्ट, कल्चर, एथिक्स एंड साइंस एवं दैनिक जागरण के संयुक्त तत्वावधान में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन पटना संग्रहालय के संग्रहलायध्यक्ष डॉ. विजय कुमार, एफसीईएस की सचिव अभिनेत्री सुनीता भारती व संग्रहालय के उप संग्रहलायध्यक्ष डॉ. शंकर सुमन ने दीप प्रज्जवलित कर संयुक्त रूप से किया। निर्णायक मंडल में शामिल संग्रहालय के पूर्व निदेशक डॉ. उमेश चंद द्विवेदी, काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. चितरंजन प्रसाद सिन्हा, व पटना संग्रहालय के शोध निदेशक डॉ. शिव कुमार मिश्र शामिल थे। मुख्य अतिथि पटना विश्व विद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. वीके जमुआर ने विजेता पुरस्कृत छात्रों को ट्राफी और प्रमाण पत्र दिए। इसके साथ ही सभी छात्रों को सहभागिता प्रमाण पत्र दिया गया।

चामर ग्राहिणी यक्षिणी शताब्दी वर्ष

पटना संग्रहालय में बुधवार को चामर ग्राहिणी यक्षिणी : परिचय, एतिहासिकता और कला पक्ष विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने के बाद आयोजक मंडल के साथ सफल प्रतिभागी, निर्णायक मंडल।

इंटरनेट के माध्यम से मुझे से याक्षिणी के बारे में पता चला था। फिर मैंने पटना संग्रहालय आकर इस बारे में और नजदीक से जानकारी मिली।

अभिनव आनंद (कक्षा 9, बीडी पब्लिक स्कूल)

मेरे पापा ने एक बुकलेट लाया था मुझे याक्षिणी के बारे में उसी से जानकारी मिली। अभी उनका शताब्दी वर्ष भी आ रहा है इसलिए और जानकारी विभिन्न अखबारों और पत्रिकाओं से भी मिली। पापा के लाए हुए बुकलेट में काफी अहम और महत्वपूर्ण जानकारियां थी।

आदित्य नारायण सिंह(कक्षा, 9, बीडी पब्लिक स्कूल)

पटना संग्रहालय में सबसे पहले याक्षिणी के बारे में जानकारी मिली। कक्षा छह में मैंने पहली बार इस बारे में अपनी स्कूली किताबों में पढ़ा था फिर जब संग्रहालय आई तो सबसे पहले इस प्रतिमा को देखा। स्कूली शिक्षकों ने ज्यादा जानकारी देने में मदद की।

साक्षी सिंह(कक्षा 10, केंद्रीय विद्यालय)

इस बारे में मुझे सबसे पहले इंटरनेट पर जानकारी मिली। फिर कई सारे पत्र-पत्रिकाओं को मैंने पढ़ा जिसमें इस बारे में विस्तार से बताया गया था। यह हमारे राज्य के लिए गौरव की बात है यहां यह प्रतिमा मिली। सरकार को इसके व्यापर प्रचार करना चाहिए।

शुभांजलि सिंह(कक्षा 11, कार्मेल स्कूल)

जब मैंने इस प्रतियोगिता के बारे में जाना तब ही याक्षिणी के बारे में भी जाना। फिर मैंने कई सारे वेबसाइट्स, किताबें आदि का उपयोग कर के याक्षिणी के बारे में जरूरी जानकारियां जुटाई।

कनीज फातिमा

याक्षिणी के बारे में अपने कॉलेज के शिक्षकों से जानकारी मिली। खासकर इतिहास के शिक्षक ने कई उपयोगी बातें बताई। फिर मैंने इंटरनेट के प्रयोग से अन्य जानकारियां इकट्ठा की।

माया कुमारी (कक्षा, 11, जेडी विमेंस कॉलेज)

बच्चों का आत्मविश्वास

विरासत की रक्षा के लिए युवाओं को प्रेरित करने का यह एक अच्छा प्रयास है। इन्हें प्रेरित कर के हमें भविष्य में काफी फायदा होगा। ऐसे कार्यक्रमों से स्कूल, कॉलेज के छात्र-छात्राओं को अपनी विरासत के प्रति रुचि बढ़ेगी। बाद में वो इसे संभाल सकेंगे। युवाओं में चीजों को समझने और उसे ग्रहण करने की अद्भूत शक्ति रहती है। साथ ही इस तरह के कार्यक्रमों से बच्चों का आत्मविश्वास भी काफी बढ़ता है। उनके बोलने व लिखने की शैली भी काफी हद तक सुधर जाती है। वो अंतर्मुखी नहीं रहते हैं।

डॉ उमेश चंद द्विवेदी
पूर्व निदेशक संग्रहालय, बिहार

जज की राय

विरासतों के प्रति जागरूकता

प्राचीन मूर्तियों के बारे में जागरूक करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। ऐसे कार्यक्रमों से अपनी विरासतों के प्रति लोगों की जागरुकता बढ़ेगी। विरासत को बचाने के अब तक जितने भी कार्यक्रम हुए हैं उनमें यह सबसे बढ़िया है। इससे बच्चों की बोलने, लिखने व सुनने की क्षमता बेहतर होती है।

डॉ. चितरंजन प्रसाद सिन्हा, पूर्व निदेशक, कासी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना

एतिहासिक धरोहर की जानकारियां

पटना संग्रहालय में कला संस्कृति और एतिहासिक महत्व के विषयों पर हमेशा कार्यक्रम होते रहे है। चामर-ग्राहिणी यक्षिणी शताब्दी -वर्ष के मौके पर आयोजित इस ओपन -लेटर प्रतियोगिता में बच्चों ने अच्छी प्रस्तुति दी। इस प्रकार के कार्यक्रम से बच्चों के बीच हमारे एतिहासिक धरोहर की जानकारियां वृहत स्तर से पहुंच पाती है।

यहां हुए आलेख प्रतियोगिता में बच्चों की भागिदारी और उनके वाचन से इसकी झलक मिलती है।

डॉ शिव कुमार मिश्र

चामर ग्राहिणी यक्षिणी : परिचय, एतिहासिकता और कला पक्ष

प्रथम पुरस्कार

कला को शब्दों में वर्णित कर पाना कठिन है किंतु फिर भी मानव ने कहा है कि कला मानव मन के सर्वस्व कल्पनाओं का प्रत्यक्ष रूप है। कोई भी विशिष्ट कला कलाकार की रचनाशीलता, शिल्पकारिता और कल्पनाशीलता का द्योतक होता है। अलग-अलग शताब्दियों में कला यथार्थवाद, प्रकृतिवाद, आदर्शवाद जैसे विभिन्न मतों को प्रकट करने का श्रोत रहा है।

कला के विविधा रूपों में एक, मूर्ति कला, किसी भी द्रव्य को जीवंत वस्तुरूप में प्रकट करने की कला है। कालखंड के उत्तरार्ध से ही यह अपने त्रिविमीय रूप में प्रकट होती रही है।

भारतीय मूर्ति कला अपनी वास्तविकता व एतिहासिक महत्ता की दृष्टि से विश्व कला पटल पर अपनी अमित छाप छोड़ती है। यह विभिन्न प्रकृति आयामों जैसे जीव-जगत, पौराणिकता, मानवीय मूल्यों इत्यादि का अनूठा समागम रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता की मूर्तियाँ, दक्षिण के मंदिरों की नक्काशी, दीदारगंज की यक्षिणी व नटराज मूर्ति जैसी उत्कृष्ट कृतियाँ भारतीय मूर्ति कला के स्वर्णिम इतिहास को अलंकृत करती है।

उन सब में यक्षिणी की मूर्ति अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। यक्षिणी की मूर्ति एक स्त्री की मूर्ति है जो 'यक्षी', 'चामर ग्राहिणी' आदि नामों से भी संबोधित होती है। पौराणिक मान्यता अनुसार यक्ष और यक्षिणी नभचर हैं और अद्भुत शक्तियों के स्वामी भी। भारतीय दर्शनशास्त्र व ग्रंथों में भी इनका उल्लेख है। संग्रहालय स्थित इस मूर्ति का नाम 'चामर ग्राहिणी यक्षिणी' इसलिए पड़ा होगा क्योंकि इसकी दायीं हाथ में चामर है और प्रकृति प्रदत अद्भुत शक्तियों की स्वामिनी नारी है और नारी मूर्ति होना इसके नाम की सार्थकता है।

निर्माण के 2300 साल पश्चात् 1917 में यक्षिणी की मूर्ति अपनी शिल्पकला को लेकर विद्वानों व पुरातत्विदों में तर्क का केंद्र रह चुकी है। आज भी इस विषय पर संशय है कि मूर्ति किसी यक्षिणी की है, सामान्य चामर धारणी ग्रामीण स्त्री की अथवा किसी ग्राम देवी की। मौर्य सम्राट अशोक द्वारा स्त्रियों को सामाजिक प्रतिष्ठा और वंदनीय स्थान दिलाने का प्रयास हुआ था। विद्वानों ने मौर्यकालीन जगत कल्याण यक्षिणी मूर्ति की उसी प्रयास को साकार करने वाला बताए है। गंगा किनारे दीदारगंज में मिट्टी में उल्टी दबी होने के कारण धोबियों द्वारा अनभिज्ञतावश इसका इस्तेमाल कपड़े धोने के लिए होता था। एक दिन मूर्ति में घुसे साँप को निकालने के क्रम में लोगों को इसकी मौजूदगी का पता चला।

कला के विविध आयामों से समा इस मूर्ति की विशिष्ट है इसकी चमक व मुस्कान। निर्माण के हजारों साल पश्चात् भी इसकी आभ अक्षुण्ण मूर्ति पर अलंकृत है। मूर्ति का निर्माण के भूरे रंग के बलुआ पत्थर से हुआ है। पुरातत्विदों के अनुसार मुख व्याख्या कला को जिस अनूठे व बारीकी से यक्षिणी में उतारा गया है उस लियोनार्डो-डा-विंची की मोना-लिसा में भी नहीं दिखा प्रसिद्ध इतिहासकार अहमद कहते है कि ''सौन्दर्य के काल्पनिक प्रतिमाओं के आधार पर गढ़ी यह प्राचीन मूर्ति है।'' वे इस मूर्ति पर तत्कालीन यूनानी कला का प्रभाव भी मानते हैं।

इतिहास के पन्नों में खोल उस महान मूर्तिकार पर सारी दुनिया आश्चर्यचकित रह जाती है जिसकी कल्पना का अप्रतिम परिणाम है यह मूर्ति। सीधी खड़ी मुद्रा वाली इस मूर्ति में स्त्री शरीर की हर बारीकी को बेहद खुबसूरती के साथ उकेरा गया है। मूर्ति में बड़ी ही कलात्मकता के साथ उकेरा गया है। मूर्ति में बड़ी ही कलात्मकता के साथ वालों को बाँधा गया है और बंधन से निकले बाल लटे बन चेहरे पर बिखरी है। बंधन के ऊपर मोतियों की लड़ी लटकी है। मूर्ति में सुंदरता, मातृत्व व सेवा भाव दिखता है। सुंदरता को दर्शाते आकर्षक नैन-नक्शा व शारीरिक बनावट है। हल्के उठे दारों पाँव से चामर डुलाने की अभिव्यक्ति होती है। इससे मूर्ति में सेवाभाव दिखता है। प्रसव पश्चात् आने वाली महीन लकीरों को मूर्ति के पेट पर उकेर कर मूर्तिकार ने मातृत्व भाव दर्शाया है। मीठी मुस्कान चेहरे पर लिए 160 सेंटीमीटर की इस मूर्ति का ऊपरी भाग खुला है। संपूर्ण शरीर विभिन्न आभूषणों से सुसज्जित है। दाएं कंधे से होते हुए दुपट्टा दाएं हाथ में अटका है।

आलेख : अमृता भारद्वाज

तृतीय पुरस्कार

कला, मैथिलीशरण गुप्त जी के शब्दों में ''अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति को ही तो कला कहते हैं।'' जीवन, ऊर्जा का महासागर है। कला जीवन को सत्यम, शिवम्, सुन्दरम् से समन्वित करती है। कला उस क्षितिज की भाँति है जिसका छोर नहीं, इतनी विशाल इतनी विस्तृत अनेक विधाओं को अपने में समेटे, तभी तो कवि मन कह उठा- साहित्य संगीत कला विहीन : साक्षात् पशुः पृच्छ विषाणहीनः।। रविन्द्रनाथ ठाकुर के मुख से निकला ''कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है'' तो प्लेटो ने कहा - ''कला सत्य की अनुकृति की अनुकृति है।'' कला ही है जिसमें मानव मन में संवेदनाएँ उभारने, प्रवृत्तियों को ढालने तथा चिंतन को मोड़ने, अभिरुचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता है। मनोरंजन, सौन्दर्य, प्रवाह, उल्लास न जाने कितने तत्वों से यह भरपूर है, जिसमें मानवीयता को सम्मोहित करने की शक्ति है, जिसमें मानवीयता को सम्मोहित करने की शक्ति है। कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है जिसने शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है। कलाएँ कई प्रकार की होती है जैसे गायन, वादन, वर्तन, नाट्य, आलेख, विशेषक, मूर्तिकला आदि। इन्हीं में से एक है मूर्तिकला। मूर्तिकला या शल्पिकला कला का वह रूप है जो त्रिविमीय होती है। यह कठोर पदार्थ (जैसे पत्थर), मृदु पदार्थ (प्लास्टिक) एवं प्रकाश आदि से बनाये जा सकते हैं। मूर्तिकला एक अतिप्राचीन कला है। भारत की मूर्तिकला तो विश्वप्रसिद्ध है। भारत के वास्तुशिल्प, मूर्तिकला, कला और शिल्प की जड़े भारतीय सभ्यता के इतिहास से बहुत दूर गहरी प्रतीत होती है। भारतीय मूर्तिकला आरंभ में ही यथार्थ रूप लिए हुए है। इसमें मानव आकृतियों में प्रायः पतली कमर, लचीले अंगों एवं तरुण और संवेदनापूर्ण रूप को चित्रित किया जाता है। भारतीय मूर्तियों में पेड़-पौधों और जीव-जन्तुओं से लेकर असख्य देवी-देविताओं को चित्रित किया गया है।

आलेख : हर्षा

द्वितीय पुरस्कार

कोई भी कलाकार जब अपने हाथ में कलम पकड़ता है तब सबसे पहला, जो चित्र वह बनाता है वह नारी का होता है। नारी, इस पूरे विश्व के रचयता यानी ईश्वर की एक ऐसी कलाकृति है जिसके हर गुण एवं हर अंग में सुंदरता कूट-कूट कर भरी हुई है। नारी सृष्टि की अनुपम देन है।

नारी ईश्वर (ईश्वर) की अनुपम देन के साथ, बनाई गई चलती फिरती एक ऐसी मूर्ति हैं जिसमें ममता, प्यार, स्नेह, गुस्सा, करुणा एवं देवी के रूप व रंग का सम्मपूर्ण समावेश है। ऐसे ही एक अद्भुत कलाकृति है 'चामर ग्राहिणी यक्षिणी'। जिसकी चमक की चकाचौन्ध हमें मनमोहित कर देती है, एक हि बार में हमारे नजर के पार उतर जाती हैं।

ऐसी मनमोहक मूर्ति ने देखने को कभी मिली थी और ना हि मिलेगी। बहुतो के मन में यह सवाल उठ रहा होगा कि आखिर ये यक्षिणी हैं क्या? क्यों इस मूर्ति को इतनी महत्व दी जा रही है। यक्षिणियों न भगवान होती है और न हम जैसी इंसान। इनके पास शक्तियां तो होती है पर ये परमेश्वर भी नहीं होती। यह स्वर्ग लोक में नोचती या तो अपशरा होती है या फिर देवताओं के आजु-बाजु चामर डोलाने वाली।

निबंध प्रतियोगिता

अब आप सब यही सोच रहे होंगे कि आखिर इस साधारण सी चुनार पत्थर से बनी हुई यक्षिणी के ऊपर आज अचानक से यह भाषन, आलेख व वाद-विवाद आखिर क्यों??

तो जरा, मैं आपको बता दूँ कि ये कोई आम कलाकृति नहीं बल्कि ये मौर्य युगीन लोककला मुख्यतः एक ऐसी मूर्ति है जो कई हजार जब कोई चीज सुंदर होती है तब उसकी चर्चा महान व्यक्तियों के बीच होने लगती है। ''जिस तरह हीरे की परख एक जोहरी को होती है। ठीक उसी प्रकार कलाकृति की परख एक कलाकार को होती है।

कारल, वसुधरा, शरण ऐसे बहुत से लेखकों ने चामर ग्राहिणी यक्षिणी पे अपने कलम की नींव तोर डाली, किंतु यक्षिणी कि सुंदरता की वर्णन में सब असफल रहें।इस ईसापूर्व तीसरी शताब्दी की इस प्रस्तर कलाकृति की ऐतिहासिकता, कलात्मकता और तकनीक का अध्ययन विश्व के सैकड़ों विद्वानों ने किया है, और यह पाया भी कि विशिष्ट कलाकृतियों के मुकाबले चामर ग्राहिणी की मूर्ति श्रेष्ठ है।

आलेख : शालिनी कुमारी